## अध्याय 3

# मनुष्य

बच्चों की एक कहानी है जिसमें एक प्रसिद्ध नक्काशी करने वाले ने लकड़ी पर एक छोटे लड़के के चित्र की आकृति बनाई। यह एक सुन्दर आकृति थी एवं उसने उसका नाम पिनोकचियो रखा। उसे इस कार्य पर गर्व था किन्तु उसके बदले में उस आकृति से प्रेम प्राप्त करना असम्भव था।

यदि वह मनुष्य उस लकड़ी के लड़के के अन्दर बातचीत करने वाली एक छोटी मशीन रख देता तो कैसा होता? यदि वह ऐसा बनाता कि वह छोटा पुतला चलता हुआ कहता "मैं तुम से प्रेम करता हूं", क्या उससे उस मूर्तिकार को संतुष्टि होती? क्या वह पुलकित होकर कहता, "मैं अब जानता हूं कि यह मूर्ति मुझसे प्रेम करती है?" नहीं, क्योंकि वह प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं होती। यह केवल यांत्रिक वाक्यांश होता जिससे कोई वास्तविक अनुभूति नहीं होती।

कहानी बताती है कि किसी तरह वह लड़के का पुतला जीवित हो गया। उसकी खुद की बुद्धि थी और जब वह कहता "मैं तुमसे प्रेम करता हूं" वह मूर्तिकार को पुलकित कर देता था। क्यों? क्योंकि लकड़ी के पुतले पर दबाव नहीं डाला गया था। उसने प्रेम से यह कहा था।

हम जानते हैं कि यह कहानी मात्र किस्सा है किन्तु यह हमारे सामने एक छोटी तस्वीर रखती है कि जब परमेश्वर ने हमें बनाया तो उसे कैसे महसूस

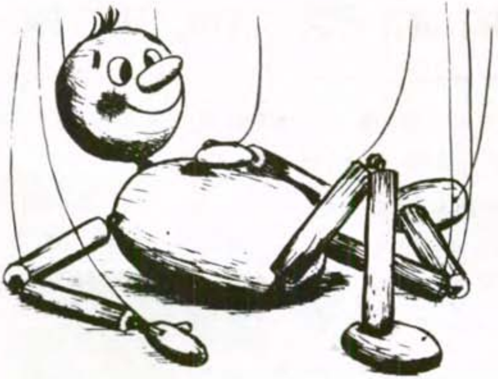

हुआ। उसने उसे सुन्दर, अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं चुनाव करने की सामर्थ के साथ बनाया।

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया किन्तु लकड़ी पर नक्काशी करके नहीं। उसने उसे कैसे बनाया? उसमें कौन-कौन से गुण रखे? पिछले पाठ में हमने परमेश्वर के कुछ गुण एवं उसके प्रति हमारे कर्तव्यों का अध्ययन किया अब आइये हम देखें कि परमेश्वर ने मनुष्य को कैसे बनाया एवं जिम्मेवारियां उसे दीं।

## इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे .....

मनुष्य की दशा सृष्टि के समय
मनुष्य की दशा अभी

## यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि .....

- परमेश्वर ने कैसा और क्यों मनुष्य को बनाया, बता सकें।
- मनुष्य की पापी दशा का कारण समझ सके।

# मनुष्य की दशा सृष्टि के समय

उद्देश्य : १. मनुष्य की सृष्टि कैसे की गई और उसके सृष्टि किये जाने का एक कारण जान लें।

परमेश्वर ने एक सुन्दर संसार की सृष्टि, वृक्षों, फूलों एवं जानवरों के साथ की। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने जो कुछ देखा उससे प्रसन्न था। किन्तु यह पूर्ण नहीं था। उस सुन्दरता का आनन्द उठाने एवं सहभागिता के लिये कोई व्यक्ति नहीं था।

उत्पत्ति : १:२६:२७ हमें बताती है :

तब परमेश्वर ने कहा "और अब हम मनुष्य को बनायेंगे; वह हमारे समान एवं मिलता-जुलता होगा। उसका सारी मछलियों, पक्षियों और सभी जानवरों घरेलू एवं वन्य, बड़े एवं छोटे सभी के ऊपर अधिकार होगा। अतः परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि अपने स्वरूप में की।

मनुष्य जानवरों की तुलना में जिनकी सृष्टि पहले से ही की गई थी, भिन्न था क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। उसकी सृष्टि महिमापूर्ण थी एवं देह प्राण व आत्मा में सिद्ध था। उत्पत्ति २ में विस्तार से बताया गया है कि परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि जमीन की मिट्टी से किस तरह की। तब उसने मनुष्य के नथुनों में जीवन का श्वांस फूंका और मनुष्य जीवता प्राणी बन गया।

जीवन के साथ जिम्मेवारी भी आई। मनुष्य स्वयं निर्णय ले सकता था। वह अपने प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर को महिमा दे सकता था। यशायाह ४३:७ बताती है "वे मेरे लोग हैं और मैंने उन्हें अपनी महिमा के लिये सृजा है।"

बाइबल बताती है कि सायंकाल के ठण्डे समय में परमेश्वर मनुष्य के साथ उस सुन्दर बगीचे में जहां वे रहते थे, चलता-फिरता एवं बातचीत

करता था। परमेश्वर उन पहले लोगों से अर्थात् आदम और हव्वा से प्रेम रखता था एवं चाहता था कि यह सिद्ध सहभागिता हमेशा बनी रहे। किन्तु वह जानता था कि दबाव से यह सिद्ध नहीं हो सकता और यह भी कि आदम और हव्वा के पास परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने की स्वतंत्र इच्छा न होती।

चूंकि परमेश्वर के पास चुनाव करने की स्वतंत्रता है, और अपने समान ही मनुष्य को बनाया अतः मनुष्य को उसने यह निर्णय करने की स्वतंत्रता दी कि यह सहभागिता — अटूट एवं सुन्दर-जैसे थी वैसे हमेशा बनी रहे। शायद आदम व हव्वा ऐसा करना चाहते थे किन्तु वे कुछ अन्य चीजें भी चाहते थे। एक दिन वे उस स्थान पर आये जहां उन्हें अपनी मन भावनी वस्तु कां चुनाव करना था।

## जो आपको करना है

१. प्रत्येक सही कथन के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींचिये।

अ. मनुष्य परमेश्वर की महिमा के लिये बनाया गया था।

ब. परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि बिना किसी चीज के की।

स. परमेश्वर के श्वाँस ने मनुष्य को जीवता प्राणी बना दिया।

ड. मनुष्य देह, प्राण एवं आत्मा में सिद्ध सृजा गया था

इ. मनुष्य चुनाव करने की स्वतंत्रता के साथ सृजा गया था।

२. प्रकाशित वाक्य ४:११ को मुखाग्र याद कीजिये। मुखाग्र करने के बाद निम्नलिखित खाली स्थानों की पूर्ति कीजिये।

हमारे............. और.........तू ही...........,........., और ...,.......... ग्रहण करने के ............ है क्योंकि तूने ही

सब वस्तुयें .................. और वे तेरी ही इच्छा से ....... और .................... ।

३. निम्न कथन के लिये सही पूर्ण वाक्यांश का चुनाव करें। मनुष्य इसलिए बनाया गया ताकि

अ. उसका दमन एवं उससे अधिक कार्य लिया जाये।

ब. उस पर परमेश्वर की सेवा के लिए दबाव डाला जायें।

स. परमेश्वर की महिमा हो।

# मनुष्य की दशा अभी

उद्देश्य २. पाप में गिर जाने के फलस्वरूप मनुष्य की दशा को समझना।

अपनी सृष्टि के साथ संगति रखने में परमेश्वर का हृदय कितना आनन्दित हुआ होगा। तब आदम और हव्वा ने इस बहुमूल्य संगति को तोड़ने का चुनाव किया।

मनुष्य गलत चुनाव करके पापी हो गया और अपने सिद्धता के ऊंचे पद से गिर गया। रोमियों ५:१९ में लिखा है "एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से सभी लोग पापी ठहरे।"

परमेश्वर का न्याय पाप की उपेक्षा नहीं कर सका। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता और अपने वचन के विरुद्ध नहीं जा सकता। उसने कहा था कि अनाज्ञाकारिता मनुष्य को नाशमान कर सकती है। आदम और हव्वा को उस स्वर्गतुल्य अदन की वाटिका को छोड़ना एवं परमेश्वर की उपस्थिति से दूर होना पड़ा।

मनुष्य की दशा आज भी पापमय है। रोमियों ३:२३ कहती है "सबने पाप किया है एवं परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" मनुष्य ने अपने चुनाव करने की योग्यता को कभी भी नहीं खोया। गलत चुनाव अभी भी लोगों को परमेश्वर से अलग करता है।

● ● ●

## जो आपको करना है

इन अभ्यासों में उस उत्तर का चुनाव करें जो प्रत्येक वाक्य को अच्छी तरह पूर्ण करता हो। अपने चुनाव के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींचिये।

४. सपन्याह ३:१७ कहती है कि जब आप प्रभु के साथ संगति रखते हैं तो वह

अ. कम से कम है जो आप कर सकते हैं।

ब. गीत गाता है और आपसे प्रसन्न है।

स. जानता है कि मनुष्य शीघ्र उसकी आज्ञा दोबारा ठुकराएगा।

ड. आपको नया जीवन देगा।

५. अय्युब ८:३ कहता है "ईश्वर अन्याय नहीं करता है। वह धर्म को उल्टा नहीं करता" इसलिए परमेश्वर को उसके स्वभाव के अनुकूल करना था और

अ. मनुष्य भले या बुरे के प्रति सही चुनाव करने की योग्यता को खो बैठा।

ब. दण्ड देने के द्वारा अपने वचन को पूरा करना था।

स. आदम और हव्वा को अदन की वाटिका को छोड़ना पड़ा।

ड. आदम और हव्वा ने उसके आदेशों को नहीं समझा और उन के विरुद्ध फैसला किया।

६. मनुष्य की स्थिति अब निम्न में से एक है :

अ. परमेश्वर से अलगाव।

ब. एक पापी स्वभाव।

स. पापों के प्रति कोई जिम्मेवारी नहीं।

## अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. मनुष्य परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया।
स. परमेश्वर के श्वांस ने मनुष्य को जीवित प्राणी बना दिया।
ड. मनुष्य देह, प्राण एवं आत्मा में सिद्ध सृजा गया।
इ. मनुष्य चुनाव करने की स्वतंत्रता के साथ सृजा गया।

४. ब. गीत गाता है एवं आपसे प्रसन्न है।
ड. आपको नया जीवन देगा।

२. प्रभु, परमेश्वर, महिमा, आदर, सामर्थ, योग्य, सृजी थीं सृजी गई।

५. ब. दण्ड देने के द्वारा अपने वचन को पूरा करना।
स. आदम और हव्वा को अदन की वाटिका को छोड़ना पड़ा।

३. स. परमेश्वर की महिमा।

६. अ. परमेश्वर से अलगाव।
ब. एक पापी स्वभाव।

# आपकी टिप्पणी लिखने के लिए